



## काजी मुजाहिदुल इस्लाम कासमी

ज़मीन की सतह पर कुछ ऐसी क्रांतिकारी हस्तियां पैदा होती हैं जिनका जीवन मानवता के लिए दया और भलाई की निशानी होती है। जिनसे ज्ञान व तर्क—वितर्क के चश्मे फूटते हैं और सदियों तक विधार्थी एवं ज्ञान प्रेमी अपनी प्यास बुझाने के लिए इनके विचारों एवं चिन्तन से लाभान्वित होते रहते हैं। यूं यह सिलसिला जारी रहता है, वास्तव में ये हज़रात ऐसी छाप छोड़ आते हैं कि इनको भूलना आसान नहीं रहता, ऐसे चमकते सितारों को इतिहास के पन्ने छिपा नहीं सकते, यूं दीने हक के सरफरोश अपने अपने हालात के अनुसार विभिन्न मैदानों में महत्वपूर्ण सेवाएं अंजाम देते रहते हैं। इन्हीं महान हस्तियों में एक नाम काजी मुजाहिदुल इस्लाम कासमी (रह०) का है। जिन्होंने धार्मिक क्षेत्र के मैदान में बहुत बड़ी सेवाएं दी हैं। आप (रह०) फ़िक्ह के विशेषज्ञ थे और कज़ा के विषय में चिन्तित रहते थे, नीचे के पैराग्राफ में काजी मुजाहिदुल इस्लाम कासमी (रह०) के विषय में संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जाता है:

काजी मुजाहिदुल इस्लाम कासमी (रह०) का जन्म सन 1936 (1355हि०) में हिन्दुस्तान की ज़मीन ज़िला दरभंगा के मशहूर ख़ानदान में हुआ था। आप (रह०) के पिता मौलाना अब्दुल अहद कासमी आलिमे दीन लेखक थे और शैखुल हिन्द मौलाना महमूद हसन (रह०) के शार्गिदों (शिष्यों) में से थे। सन् 1954 ई० (1930 हि०) में मदरसा देवबन्द से अच्छे नम्बरों के साथ सफलता हासिल की। उसके बाद कभी—कभी पढ़ाने के काम में व्यस्त रहे, और लम्बे समय तक बिहार में मदरसा अहमदिया मधुबनी में शैखुल हदीस के पद पर कार्यरत रहे।

काजी साहब (रह०) का जन्म ज्ञानी व धार्मिक ख़ानदान में हुई, ज्ञान एवं चिन्तन रखने वाले पिता की देखरेख में परवरिश पाने से आप (रह०) में सज्जनता, धार्मिक विवेकशीलता, ज्ञान की इच्छा एवं सद्चरित्र पैदा हुआ। जिसका प्रभाव आप (रह०) के व्यक्तित्व एवं चरित्र में नुमायातौर पर दिखाई देता है।

### शिक्षा:

हज़रत काजी मुजाहिदुल इस्लाम कासमी (रह०) ने दारुल उलूम मऊनाथ भंजन, यू०पी० में



आरंभिक शिक्षा प्राप्त की, सन् 1951 ई0 (हिजरी 1370) से सन् 1955 ई0 (हिजरी 1374) तक दारुल उलूम देवबन्द में उच्च शिक्षा हासिल की, मौलाना सैय्यद हुसैन अहमद मदनी (रह0) से आपने बुखारी, अल्लामा मुहम्मद इब्राहिम बलयावी (रह0) से मुस्लिम, मौलाना एजाज अली (रह0) से तर्जिमी पढ़ी। आप (रह0) ने अल्लामा मौलाना अब्दुल हफीज बलयावी (रह0), मौलाना मुहम्मद हुसैन बिहारी (रह0), मौलाना फखरुल हसन मुरादाबादी (रह0), मौलाना बशीर अहमद खाँ (रह0), मौलाना नसीर अहमद खाँ (रह0) और मौलाना मेराजुल हक (रह0) से विभिन्न विषय की किताबें पढ़ीं। लेख, निबन्ध एवं लेखन के मामले में आप (रह0) के खास मौलाना सैय्यद मुनाजिर हसन गिलानी (रह0) थे।

काजी साहब (रह0) अपने समय के महान धार्मिक विद्वानों से विचार विमर्श किया और इस्लामी विषयों में श्रेष्ठता एवं ज्ञान हासिल किया। जिसकी अभिव्यक्ति आप (रह0) के भाषणों व लेखनी में मिलती है। आप (रह0) धार्मिक विषय में मजबूती से पकड़ रखते थे और इन धार्मिक विषय पर विशेषता प्राप्त थी।

## शैक्षिक सेवाएं:

काजी साहब (रह0) पढ़ने और पढ़ाने के पवित्र कार्यों के साथ जीवन प्रयत्न जुड़े रहे और अनेक विषयों पर अपनी अभिव्यक्ति और भाषण देते रहे, लेकिन आप (रह0) ने अध्यापन के विभाग को बाकायदा तौर पर भी अपनाया। देवबन्द से पढ़ाई पूरी करने के पश्चात हजरत मौलाना हुसैन अहमद मदनी (रह0) के आदेश पर काजी साहब (रह0) जामिया रहमानी मुंगेर (बिहार) तशरीफ ले गये। यहां आप (रह0) ने लगभग आठ वर्ष तक पठन-पाठन के काम को अंजाम दिया। आप (रह0) ने अरबी की प्रारंभिक पुस्तकों से लेकर उच्च शिक्षा की पुस्तकों का पढ़ने पढ़ाने का कार्य किया और अबू दाऊद वगैरह के पाठ आप (रह0) के जिम्मे रहे।

## रचनात्मक और संगठनात्मक सेवाएं:

आप (रह0) की मिल्ली व तंजीमी सेवाएं बहुत हैं। कुछ महत्वपूर्ण सेवाएं प्रस्तुत की जा रही हैं।

☆ यकूम शव्वाल 1384 हिजरी को मौलाना सैय्यद मिन्नातुल्लाह रहमानी की इच्छा पर इमारते शरीआ की प्रबन्धन और क़ज़ा का पद स्वीकार करते हुए फुलवारी शरीफ़ पटना तशरीफ़ फ़रमा हुए। यहां आप (रह0) ने तीन हैसियतों से काम किया:

- 1— सन् 1962 ई0 से सन् 1965 ई0 नाज़िम (प्रबन्धक) की हैसियत से।
- 2— सन् 1962 ई0 से वफ़ात तक काजी शरीअत व काजीयुल क़ज़ा की हैसियत से।
- 3— 12 रबीउल अव्वल 1420 हिजरी मुताबिक 24 जून सन 1990 ई0 से वफ़ात तक नायब अमीरे



(उप सभापति) शरीअत की हैसियत से।

- ☆ हज़रत मौलाना सैय्यद मिन्नतुल्लाह रहमानी की तहरीक पर हज़रत का़री मुहम्मद तैय्यब साहब (रह0) के ज़रिये सन् 1972 ई0 में आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की स्थापना हुई। जिसके ताने बाने के बुनने में काज़ी मुजाहिदुल इस्लाम कासमी (रह0) शुरू से शरीक रहे और दारुल उलूम देवबन्द में आयोजित इसके प्रथम सभा की तैय्यारी के लिए एक महीना दारुल उलूम में निवास किया। 22 अप्रैल सन् 2000 ई0 को काज़ी साहब (रह0) को मौलाना अली मियां नदवी (रह0) के देहान्त के बाद बोर्ड का सभापति (सदर) नियुक्त किया गया। तीन साल से भी कम अरसे तक आप (रह0) बोर्ड के सदर रहे, क्योंकि उम्र ने वफ़ा नहीं की।
- ☆ आप (रह0) की तहरीक पर बिहार में मौलाना सज्जाद हास्पिटल स्थापित करने की योजना बनाई गयी और काज़ी साहब (रह0) ने अपने साथियों की सहायता से इस काम को पूर्ण किया गया।
- ☆ फुलवारी शरीफ़ में मौलाना मिन्नतुल्लाह रहमानी टेक्निकल इन्सटीट्यूट की स्थापना के लिए आवश्यक माली व अफरादी संसाधनों की प्राप्ति भी काज़ी साहब (रह0) के परिश्रम की देन है। एजुकेशनल कैम्प का सेहरा भी आप के सर है।
- ☆ मई सन् 1992 ई0 में आप (रह0) ने आल इंडिया मिल्ली कौंसिल मुम्बई के आयोजित सभा 23–24 मई सन् 1992 ई0 को कौंसिल की कार्यवाही की।
- ☆ आपने नवयुवकों की शिक्षा के लिए अलमाहद आली लिक्तदरीब फ़ील क़ज़ा का एक ऐसा महत्वपूर्ण विभाग की स्थापना की जो नवयुवकों के निर्माण और अनुसंधान एवं सम्पादन की महत्वपूर्ण सेवाएं अंजाम दे रहा है।
- ☆ आपके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण एवं महान कारनामा इस्लामिक फ़िक्ह एकेडमी की स्थापना है। इस इदारे ने अल्प अवधि में ही मध्य एशिया में अपनी योग्यता की पहचान स्थापित कर ली और उलेमा व फुक्हा के अन्दर अनुसंधान व सम्पादन और वाद–विवाद की प्रेरणा पैदा कर दी। और देखते ही देखते देश में धार्मिक विचार–विमर्श की क्रांति पैदा हो गयी।
- ☆ देश के सम्मानित व्यक्तियों और विभिन्न विद्वानों का ज्ञानवर्धक एवं अनुसंधान सभाएँ सम्पन्न होने लगी, जिसने हज़रत इमाम अबु हनीफा (रज़ि0) की मजलिस की याद ताज़ा कर दी, आज इस इदारे को इस्लामी दुनिया में एक प्रमाणिक एवं भरोसेमंद इल्मी व फ़िक्ही इदारा स्वीकार किया जाने लगा है। इस्लामिक फ़िक्ह एकेडमी काज़ी साहब (रह0) की विद्वत्ता और कठोर परिश्रम का परिणाम है।



- ☆ आपने देश और विदेश में कई महत्वपूर्ण अवसरों पर अपनी जिम्मेदारियों को बड़ी कुशलता के साथ निभाया और उम्मत का मार्गदर्शन करते रहे जिनमें कुछ महत्वपूर्ण पद शामिल हैं।
- ☆ सदस्य (मेंबर) इस्लामिक फ़िक्ह एकेडमी मक्का मुकर्रमा, एक्सपर्ट इन्टरनेशनल इस्लामिक फ़िक्ह एकेडमी जद्दा, सदस्य (मेंबर) अल मजमउल अल इल्मी अल आलमी दमिशक, सदस्य एजाज़ी अल हैय्यातुल ख़ैर इस्लामिया कुवैत, मेंबर शरीआ बोर्ड आफ़ अमीन इस्लामिक फाइनानसियल बैंगलोर, सदस्य (मेंबर) गवर्निंग बाडी आफ़ इन्स्टीट्यूट आफ़ औब्जैक्टीव स्टडीज।
- ☆ काज़ी मुजाहिदुल इस्लाम (रह0) की मिलनसार स्नेही व्यक्तित्व ने न सिर्फ़ शैक्षणिक और चिन्तनीय क्षेत्रों में उम्मत का मार्गदर्शन की नींव प्रदान की, बल्कि अन्य कल्याणकारी, निर्माणकारी कार्यों में जैसे अस्पताल, टेक्निकल इदारे की स्थापना के माध्यम से मानव की सेवा में भी अपना आचरण अदा किया।

## प्रकाशन एवं रचनाएँ (सम्पादन):

काज़ी साहब की सेवाएं बहुमुखी थीं चूंकि आपने जहां विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिभाशाली सेवाएं प्रदान की हैं, वहीं सम्पादन एवं प्रकाशन के क्षेत्र में भी कुशलतापूर्वक सेवाएं प्रदान की। आपकी लेखनी से दसियों पुस्तकें वजूद में आयीं, जिनमें कुछ प्रमुख किताबें निम्नलिखित हैं:

- 1— इस्लामी अदालत
- 2— सिनवानुल कज़ा व उनवानुल फ़तावा (तहकीक)
- 3— नये और जदीद मौजूआत पर दसियों इल्मी मुजल्लात
- 4— निज़ामुल कज़ा इस्लामी

## सम्मान एवं एवार्ड:

काज़ी साहब की सर्वश्रेष्ठ कार्यशैली की वजह से आपको कई एवार्ड दिये गये नीचे कुछ सम्मान के नाम बयान किये जाते हैं:

- ☆ अल अमीन एजुकेशनस ट्रस्ट की तरफ़ से कम्युनिटी लीडरशिप एवार्ड
- ☆ इन्स्टीट्यूट आफ़ औब्जैक्टीव स्टडीज की तरफ़ से शाह वलीउल्लाह एवार्ड पेश किया गया।
- ☆ ए0एफ0एम0 (अफमी) यानी अमेरिकन फेडरेशन आफ़ मुस्लिम की तरफ़ से मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी एवार्ड मिला।
- ☆ अहकामे शरीअते इस्लामी की सकारात्मक कार्य के लिए कायम हुकूमत कुवैत की आला



मुशावरती कमेटी की तरफ़ से फ़िक्ही एवार्ड दिया गया ।

- ☆ मेसी (एम0ई0ए0एस0आइ0) की तरफ़ से सर्वश्रेष्ठ इस्लामी शख्सियत एवार्ड दिया गया ।
- ☆ हुकूमत मराकश की तरफ़ से सर्वश्रेष्ठ इस्लामी और इल्मी ख़िदमत पर गोल्ड मैडल दिया गया ।  
जो उस दिन एकैडमी के दफ़्तर को प्राप्त हुआ जिस दिन काज़ी साहब की वफ़ात हुई ।

### यात्राएँ (सफ़र):

काज़ी साहब ने कई देशों की यात्राएं की जिसमें सऊदी अरब, क़तर, बहरैन, कुवैत, अमेरिका, बरतानिया, पाकिस्तान, बंगलादेश, ईरान, रूस की आज़ाद मुस्लिम ज़महूरी रियासतें, मराकश और दक्षिण अफ़्रीका शामिल हैं । आपने दो हज़ किये, पहला हज़ सन् 1969 ई0 में और दूसरा यात्रा हज़ सन् 1996 ई0 में किया ।

### देहान्त:

जुमेरात 20 मोहर्रम 1423 हिजरी मुताबिक़ 4 अप्रैल सन् 2002 ई0 को दिल्ली के अपोलो अस्पताल में सात बजकर पाचं मिनट पर देहान्त हो गया ।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन

☆☆☆